

कुमाऊँ की सूखती नदियों को सदानीरा बनाएगा पडिारी ग्लेशियर

चर्चा में क्यों?

4 सितंबर, 2022 को पेयजल नगिम के मुख्य अभियंता एससी पंत ने बताया कि पडिारी ग्लेशियर से निकलने वाली पडिर नदी की प्रमुख सहायक नदियों को बागेश्वर ज़िले की बैजनाथ घाटी में गोमती नदी, कोसी, लोध और गागास नदियों के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र से जोड़ा जाएगा, जो अगले 50 साल तक पानी की ज़रूरतों को पूरा करेंगी।

प्रमुख बडिु

- पडिारी ग्लेशियर से निकलने वाली पडिर नदी बागेश्वर और अलमोड़ा ज़िले की सूखती नदियों को सदानीरा बनाने में मदद करेगी। इससे सात बड़े शहरों की आबादी के अलावा करीब एक हज़ार गाँवों को भी फायदा होगा।
- नदियों को बचाने के साथ-साथ यह योजना पेयजल, सचिाई, वदियुत उत्पादन, क्षेत्र में हरयिाली बढाने में भी मददगार साबति होगी। गाँवों से हो रहे पलायन को रोकने में भी मदद मल्लिगी।
- गौरतलब है कि भोपाल में केंद्रीय गृह मंत्री अमति शाह की अध्यक्षता में हुई मध्य क्षेत्रीय परिषद की 23वीं बैठक में मुख्यमंत्री पुष्कर सहि धामी ने इस योजना का ज़िक्र कयिा था, ताकि योजना को आगे बढाने में केंद्र की मदद ली जा सके। इस योजना में ढाई से तीन सौ करोड़ रुपए खर्च आने का अनुमान है।
- योजना के तहत पडिर नदी व उसकी सहायक नदियों सुंदरढूंगा गाड़ और शंभू गाढ़ (समुद्रतल से 22 सौ मीटर ऊँचाई पर स्थति) से करीब 150 कमी. की डेढ़ मीटर व्यास की पाइप लाइन बछिाकर कुमाऊँ के मल्ला पंया गाँव के नकिट (समुद्रतल से ऊँचाई 18 सौ मीटर) तक पानी पहुँचाया जाएगा।
- इन नदियों से लगभग 42 क्यूमेक्स (क्यूबिक मीटर प्रतिसेकेंड) पानी गंगा की सहायक अलकनंदा नदी में जाता है। इसमें से पाइप लाइन के ज़रयि डेढ़ से दो क्यूमेक्स पानी कुमाऊँ की तरफ मोड़ दयिा जाएगा।